मॉड्यूल '1' – कहानीः विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.: 9 से 12 तक)

एम.एच.डी.–09
कहानी; स्वरूप और विकास
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–09
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–09 / टी.एम.ए. / 2019–2020
कुल अंक : 100

खंड 'क'

निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 15×4=60

1. 'कहानी' की पहचान के प्रमुख आधारों को स्पष्ट कीजिए।

2. कहानी और उपन्यास का अंतर रेखांकित कीजिए।

3. कहानी की संरचना में भाषा के महत्व पर प्रकाश डालिए।

4. राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में भारतीय कहानी की भूमिका पर विचार कीजिए।

5. समकालीन हिंदी कहानी की प्रमुख प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए।

खंड 'ख'

6. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : 10×4=40

   (क) बाणभट्ट की 'कादम्बरी'
   (ख) कहानी में रोचकता और सार्थकता
   (ग) प्रमुख रूसी कहानीकार
   (घ) नई कहानी

एम.एच.डी.–10
प्रेमचंद की कहानियाँ
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–10
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–10/टी.एम.ए./2019–2020
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10x2=20

(क) फूलमती खून का घूँट पीकर रह गयी। इस वक्त बिगड़ने का अवसर न था। घर में मेहमान स्त्री–पुरुष भरे हुए थे। अगर इस वक्त उसने लड़कों को डाँटा, तो लोग यही कहेंगे कि इनके घर में पण्डित जी के मरते ही फूट पड़ गयी। दिल पर पत्थर रखकर फिर अपनी कोठरी में चली गयी। जब मेहमान बिदा हो जाएँगे, तब वह एक–एक की खबर लेगी। तब देखेगी, कौन उसके सामने आता है और क्या कहता है। इनकी सारी चौकड़ी भुला देगी।

(ख) रूपमणि ने आवेश में कहा– अगर स्वराज्य आने पर भी सम्पत्ति का यही प्रभुत्व रहे और पढ़ा–लिखा समाज यों ही स्वार्थान्ध बना रहे, तो मैं कहूँगी, ऐसे स्वराज्य का न आना ही अच्छा। अंग्रेजी महाजनों की धन–लोलुपता और शिक्षितों का स्वहित ही आज हमें पीसे डाल रहा है। जिन बुराइयों को दूर करने के लिए आज हम प्राणों को हथेली पर लिए हुए हैं, उन्हीं बुराइयों को क्या प्रजा इसलिए सिर चढ़ायेगी कि वे विदेशी नहीं, स्वदेशी हैं? कम–से –कम मेरे लिए स्वराज्य का यह अर्थ नहीं है कि जॉन की जगह गोविन्द बैठ जाएँ। मैं समाज की ऐसी व्यवस्था देखना चाहती हूँ, जहाँ कम–से–कम विषमता को आश्रय न मिल सके।

(ग) दुखी ने फिर कुल्हाड़ी उठाई। जो बातें पहले से सोच रखी थीं, वह सब भूल गई। पेट पीठ में धँसा जा रहा था, आज सवेरे जलपान तक न किया था। अवकाश ही न मिला उठना तो पहाड़ मालूम होता था। जी डूबा जाता था, पर दिल को समझाकर उठा। पंडित हैं, कहीं साइत ठीक न विचारे, तो फिर सत्यानाश हो ही जाए। जभी तो संसार में इतना मान है। साइत ही का तो सब खेल है। जिसे चाहे बिगाड़ दें। पंडितजी गाँठ के पास आकर खड़े हो गये थे और बढ़ावा देने लगे– हाँ, मार कसके, और मार–कसके मार–अबे जोर से मार–तेरे हाथ में तो जैसे दम ही नहीं है– लगा कसके, खड़ा सोचने क्या लगता है– हाँ बस फटा ही चाहती है! दे उसी दरार में!

2. 'स्वाधीनता आंदोलन और प्रेमचंद की कहानियाँ' विषय एक निबन्ध लिखिए। 16

3. प्रेमचंद की कहानियों में उठाये गए प्रमुख स्त्री प्रश्नों को रेखांकित कीजिए। 16

4. 'प्रेमचंद की कहानियाँ जाति उन्मूलन का उद्घोष हैं' - इस कथन की समीक्षा कीजिए। 16

5. प्रेमचंद की कहानी कला पर प्रकाश डालिए। 16

6. किसान जीवन के संदर्भ में 'सवा सेर गेहूँ' कहानी का मूल्यांकन कीजिए। 16

एम. एच. डी.–11
हिन्दी कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–11
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–11/टी.एम.ए./2019–2020
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10x2=20

(क) मुहल्ला छोटे अफसरों और बड़े बाबुओं की बस्ती का। मुहल्ला भी क्या आमने–सामने खड़े बत्तीस क्वार्टरों का एक ब्लॉक। सुबह के नौ बजे होंगे, शायद साढ़े नौ। बदली थी, आकाश का मुंह उतरा हुआ। सड़क के किनारे–किनारे लगे युकिलिप्टस के पेड़ चुप थे, पत्तियां तक जमी हुईं। ऊपर से मौसम छलने वाला था लेकिन लोग जानते थे कि ज्यादा समय नहीं है। दफ्तर की भगदड़ शुरू होने का वक्त करीब–करीब ही था। वहां खड़े हर आदमी के पास कोई न कोई अपनी शिकायत थी जिसे जल्द से जल्द सुनाकर वह हल्का होना चाहता था। सभी का ख्याल था कि इधर आए दिन जो चोरियां होने लगी थीं, उन सबकी जड़ में यही छोकरा है।

(ख) छोड़ो! तो मतलब यह है कि अगर उनकी संस्कृति हमारी संस्कृति है, उनकी आत्मा हमारी आत्मा और उनका संकट हमारा संकट है–जैसा कि सिद्ध है कि है–जरा पढ़ो अखबार, करो बातचीत अँगरेजीदाँ फर्राटेबाज लोगों से–तो हमारे यहाँ भी हिरोशिमा पर बम गिरने वाला विमानचालक क्यों नहीं हो सकता और हमारे यहाँ भी साम्राज्यवादी, युद्धवादी लोग क्यों नहीं हो सकते! मुख्तसर किस्सा यह है कि हिन्दुस्तान भी अमरीका ही है।

(ग) और मामी को उसने कितनी बातें सुनाई थीं, ''क्यों बाई, जई सिखाओं हो तुम अपने बच्चों को, एक दिन हमारे मूँड़ पर मूतने को कह देना। तुम्हारे नज़दीक रहते हैं तो का हमारा कोई धरम–करम नहीं है? का मरजी है तुम्हारी साफ़–साफ़ कह दो।'' मामी गिड़गिड़ा रही थी, ''बाई जी, माफ कर दो। इतनी बड़ी हो गई, मगर अकल नहीं आई इसको। कितना तो मारूँ हूँ, फिर भी नहीं समझे।'' और मामी वहीं से मालती को मारती हुई घर लाई थी।

2. 'बदबू' भ्रष्ट व्यवस्था के विरोध की कहानी है– इस कथन पर विचार कीजिए। 16

3. 'मलबे का मालिक' कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए। 16

4. नई कहानी की ग्राम–संवेदना को स्पष्ट कीजिए। 16

5. स्त्री विमर्श के आलोक में 'बोलने वाली औरत' कहानी का मूल्यांकन कीजिए। 16

6. 'तलाश' कहानी में अभिव्यक्त दलित चेतना को रेखांकित कीजिए। 16

एम. एच. डी.–12
भारतीय कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–12
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–12/टी.एम.ए./2019–2020
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10x2=20

(क) कुछ दिन पहले पूर्णिमा की एक रात राव साहब और उनकी पत्नी चाँदनी में सैर के लिए निकले थे। ऐसे समय काम से लौटता हुआ अम्माजी का बाप उनके सामने पड़ गया। इतना बड़ा आदमी अब क्या पहचानेगा! यह सोचता हुआ वह सिर झुकाकर आगे बढ़ने लगा। लेकिन राव साहब ने ही उसे पुकारा। वह भी नाम लेकर! अम्माजी का बापू फूल उठा था। उस पूरी रात घर में उन्हीं लोगों को लेकर बातें होती रहीं। उसके अगले ही दिन अम्माजी को ले जाकर उसने परिचय कराया था।

(ख) इन सब बातचीत का परिवेशगत लक्ष्य निश्चित रूप से शैलबाला होती। वरना खबरें तो वास्तव में राजनीतिक ही होती हैं। मगर राजनीति के चाल–चलन को लेकर शैलबाला से चर्चा–आलोचना संभव नहीं था। देश की समस्याओं को लेकर अपना दिमाग खराब करने का शैलबाला के पास वक्त नहीं है। अगर राशन वगैरह की कीमतें बढ़ती हैं तभी शैलबाला के पास अपने घरवाले के ऊपर नाराज होने का वक्त होता है और इन वस्तुओं की कीमत घटने पर प्रसन्न होने का। हालांकि अगर वे ध्यान से सुनें तो इन घटनाओं–दुर्घटनाओं पर भी चर्चा की जा सकती है। तो क्या इन्हीं सब बातों को लेकर बातचीत की जानी चाहिए। वे तुरंत जवाब देतीं, अरे जाइए न आप भी, सुबह–सुबह यही सब खबरें सुनाने लगते हैं। जाइए, सुबह–सुबह मन खराब मत कीजिए।

(ग) राजा तो राजा ही होता है। जन–जन का मालिक। सिर का मुकुट। किसकी मजाल जो राजा के आदेश को टाल सके? मौत अगर बख्शे तो मौत की मरजी, पर राजा की तो सपने में भी ऐसी मरजी नहीं होती। राजा के गुमान में गोया तकुआ घोंप दिया गया हो। पुतलियों की रंगत बदल गई। गरजते हुए ठाकुर पर ही बरस पड़ा, "ठाकुर तुम्हारी अक्ल और जबान तो ठिकाने है? किसके सामने क्या बकते हो, कुछ होश भी है? सरकार के आदेश से बेपरवाह नालायक तुम्हारे यहाँ फल–फूल रहे हैं। और तुम ठाकुर कहलाते हो?"

2. मलयालम कहानी के विकास पर प्रकाश डालिए। 16

3. श्रमिक जीवन के संदर्भ में 'ट्रेडिल' कहानी का मूल्यांकन कीजिए। 16

4. असमिया कहानी के विकास में इंदिरा गोस्वामी के योगदान को रेखांकित कीजिए। 16

5. 'ओऽरे चुरूंगन मेरे' कहानी में चित्रित बाल मनोविज्ञान का विश्लेषण कीजिए। 16

6. 'पाँच–पत्र' कहानी के जीवन दर्शन को स्पष्ट कीजिए। 16